एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे से आगे

इन परिस्थितियों में धर्म की शिक्षाओं और उसकी ओर आवाहन की अधिक आवश्यकता है। यह धर्म और मात्र धर्म है जो विनाश और भंवर की ओर तेज़ी से बढ़ती हुई मानवता की नौका को बचा के मुक्ति के घाट तक पहुँचा सकता है। मात्र ईश्वरीय भय है, जो उसको तबाही फैलाने वाले (घातक) हथियारों के बेजा इस्तेमाल से रोक सकता है। अगर मज़हब रुकावट नहीं बनेगा तो पता नहीं कितने और शहर 'नागा साकी' और 'हीरोशिमा' की तरह एटम और हाइड्रोजन बमों का शिकार होते रहेंगे। और न जाने कितने 'वियतनाम' साम्राजी शासकों का निशाना बनेंगे। लेबनान, इस्राइली हथियारों और अफ़गानिस्तान, रूस की विनाशकारियों का शिकार होता रहेगा। और हो सकता है कि कभी कोई बिफरा हुआ सरफिरा डिक्टेटर किसी बहादुर राष्ट्र को तोपों, टैंकों और राकिटों के सामने अपना सर न झुकाते देखकर या साधारण हथियारों में अपने को कमज़ोर पाके पराजय के ख़तरे से बचने के लिये एटमी लड़ाई शुरु कर दे और धरती भाप बन के वातावरण में बिखर जाये।

यानी यह तो सम्भव है कि इंसान भौतिक उपायों से अन्तरिक्ष पर विजय पा ले। सुदूरतम नक्षत्रों से सम्पर्क साध ले। लेकिन ईश्वर से नाता जोड़े बिना अपने मन (नफ़्स) पर विजय पाना, भावनाओं को क़ाबू में लाना, त्याग बलिदान और मानवीय सहानुभूति के भाव पैदा करना सम्भव नहीं। मानव प्रगति द्वारा अतिघातक पशु बन सकता है परन्तु अशरफ़ुल मख़लूक़ात (श्रेष्ठतम सृष्टि) नहीं बन सकता।

एक पहलू से और भी विचार किया जा सकता है और वह यह है कि इंसान के प्रत्येक कार्य का प्रेरक उसका अपने निज का लाभ होता है। वह हर काम में क़दम उठाते समय यही सोचता है कि मुझे क्या हासिल होगा! वह कभी वीरता इस लिये दिखाता है कि अपनी बहादुरी का सिक्का जमाये। कभी धन ग़रीबों में इसलिये बाँटता है कि दानवीर कहलाये। कभी पीड़ितों का सहायक इसलिए बनता है कि लोग उसे जनता का हमदर्द समझें। ऐसे अवसरों पर जब देखने में कोई स्वार्थ सिद्ध होता नहीं दिखाई पड़ता लेकिन गहराई से देखने में थाह लग जाती है कि किस–किस ढंग से उद्देश्य अपनी ही भलाई या स्वार्थ है।

ऐसे अवसर भी आ सकते हैं कि उसके दम से उसके घर वालों परिवार वालों का, कोई फ़ायदा न हो बल्कि सरसरी निगाह से घाटा ही घाटा दिखाई देता हो। कोई प्रशंसक न हो, कोई उत्साह बढ़ाने वाला न हो। ऐसे समय में अच्छाई की प्रेरक और नेकी की तरफ दे जाने वाली यह

कल्पना हो सकती है कि कोई मनुष्य भले ही न देख रहा हो परन्तु वह तो देख रहा है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सबका जानने वाला है। कोई बदला दे न दे वह तो मौजूद है जो पुकार–पुकार कर कह रहा है, ''जो कुछ अपने लिये पहले से भेज दोगे वह अल्लाह के पास सुरक्षित मिलेगा।''

धर्म की आवश्यकता पर पहले भी प्रकाश डाला जा चुका है। धर्म को ज़िन्दगी से हटा देने का नतीजा मन की ग्रंथियों, तान्त्रिकों के रोगों और अनेक प्रकार की प्रतिक्रियाओं के रूप में धर्म की आवश्यकता और पैग़म्बरों की शिक्षाओं पर चलने को आवश्यक और प्रकृति की माँग ठहराता है।

''वह्य'' अथवा रहस्यात्मक संकेत

अल्लाह द्वारा नियुक्त पैग़म्बरो की ज़रूरत इसीलिये तो है कि वह फ़ितरत के मुताबिक़, प्रकृति के अनुसार ऐसी विधियाँ सिखायें जो प्रकृति के विधाता ईश्वर ने मनुष्य की भौतिक, आध्यात्मिक और द्रन्द्रियों सम्बन्धी आवश्यकताओं का ध्यान रख के उसके लिये बनाई हैं। इन विधियों का ज्ञान सामान्य जन को तो पैग़म्बर के माध्यम से होगा लेकिन पैग़म्बर को क्योंकर ज्ञान होगा। इस विशेष सम्पर्क सूत्र को, जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर के बीच होता है जो दूसरें लोगों को उपलब्ध नहीं, जिसके द्वारा ईश्वर का संदेश पैग़म्बर प्राप्त करता है और फिर दूसरों तक पहुँचाता है ''वह्य'' कहते हैं।

पैग़म्बरी के इन्हीं दोनो पक्षों यानी ईश्वर से पाने और उसके बन्दों तक पहुँचाने की क्षमता की ओर कुर्आन की आयत में इशारा है, ''मैं तुम्हारे ऐसा इन्सान हूँ (अतएव तुम से सम्पर्क है कि सन्देश पहुँचा सकूँ) और मुझ पर अल्लाह की वही आती है (यही वह सन्देश है जो तुमको देना है)।

''वह्य'' के माने अरबी में हैं गुप्त रूप से बात करना, इशारों और संकेतों से किसी तथ्य को प्रकट करना जैसे सम्बन्धित व्यक्ति के अलावा कोई दूसरा न समझ सके। कुर्आन मजीद में ''वह्य'' शब्द का प्रयोग विभिन्न अवसरों पर हुआ है। शैतान द्वारा भ्रमित किये जाने के लिये भी यह शब्द प्रयोग किया गया है ''शैतान अपने दोस्तों के दिलों में (बुराईयों के) भाव उभारते हैं।

ईश्वर की तरफ से कोई भी बात ह्रदय में आ जाने के लिये भी यही शब्द आया है। जैसे ''हमने (जनाब) मूसा की माँ के दिल में यह बात डाली कि मूसा को दूध पिलाती रहें। और जब उनके बारे में भय हो तो नदी की लहरों को सौंप दें।'' प्रकृति के संकेत के लिये भी इसका इस्तेमाल किया गया है जैसे मधुमक्खी के लिये कहा गया है कि, मधुमक्खियों की ओर अल्लाह ने ''वह्य'' की। यअ्नी उनके स्वभाव में यह बात ठहरा दी कि वह अपने छत्ते पहाड़ों, पेड़ों और मानव निर्मित ऊँची इमारतों में बनायें। इन सभी अवसरों पर वह्य शब्द का इस्तेमाल पोशीदा इशारे (गुप्त संकेत) अर्थात् शाब्दिक अर्थ में हुआ है। चाहे यह संकेत शैतान की ओर से हुआ हो चाहे अल्लाह या प्राकृति की ओर से हुआ हो, मगर वह्य का परिभाषित अर्थ उस सम्पर्क सूत्र का है, जिसके द्वारा ईश्वर अपनी मर्ज़ी पैग़म्बरों के लिये व्यक्त करता है, इस ढंग से कि उसको ईश्वरीय सन्देश समझने में इन पैग़म्बरों को ज़रा सा भी शक न हो और किसी भी गलती की गुंजाइश न रहे।

(जारी)